पं० रामशरण शास्त्री कृत कौमुदीकथाकल्लोलिनी में व्याकरण प्रयोग

प्रो० (डॉ०) अशोक कुमार*
श्याम सुन्दर पाठक**

पं० रामशरण शास्त्री कृत कौमुदी कथाकल्लोलिनी संस्कृत की प्राचीन लोककथा की पद्धति में रची गई गद्य रचना है जिसमें वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी के सभी प्रमुख सूत्रों के उदाहरणों को कथा क्रम में समाविष्ट किया गया है। इसकी मूलकथा कथासरित्सागर की ही है जिसमें वत्सनरेश उदयन के पुत्र नरवाहन दत्त तथा उसके विवाह की रोमांचक कथा बहुत सरस प्रणाली से अलंकारों का प्रयोग करते हुए कही गई है। स्वयं लेखक का कथन है कि सरल और रोचक कथानक को सिद्धान्तकौमुदी के संधि प्रकरण से लेकर उत्तर कृदन्त तक के (उणादिप्रकरण को छोड़कर) प्रायः सभी आवश्यक सूत्रों के उदाहरणों से सम्बद्ध किया गया है।

कौमुदीकथाकल्लोलिनी को ग्यारह कल्लोलों में विभक्त किया गया है। वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार ही यह कथा–ग्रंथ पूर्वार्ध और पश्चार्ध में विभक्त है। पूर्वार्ध में पाँच कल्लोल हैं जिनके शीर्षक भी सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार ही दिए गए हैं जैसे–प्रथम कल्लोल (संधि निर्देश), द्वितीय कल्लोल (संधि निर्देश), द्वितीय कल्लोल (कारक निर्देश), तृतीय कल्लोल (समास तथा स्त्री प्रत्यय निर्देश), चतुर्थ कल्लोल (समास तथा तद्धित निर्देश), पंचम कल्लोल तद्धित तथा द्विरूक्त निर्देश)।